सरस्वती वंदना

या कुन्देदु तुषार हार धवला या शुभ्र वस्त्रावृता,
या वीणा वर दण्ड मण्डित करा या श्वेत पद्मासना।।
या ब्रह्माच्युत शंकर प्रभृतिभि: देवै: सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती नि:शेष जाड्यापहा।।

ॐ सहनाभवतु सह नौ भुनक्तु
सह वीर्यं करवावहै
तेजस्विना वधीतमस्तु मा विद्धिषावहै

असतो मा सद्गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्माअमृतंगमय
ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: